निःशुल्क प्रकाशनार्थ (दिनांक 11.09.2017)

प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 11 सितम्बर 2017 को श्री ऋषभदेव जैन शोध पीठ में लखनऊ विश्वविद्यालय, के प्राचीन भारतीय इतिहास के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 किरण कुमार थपलियाल एवं प्रो0 अमर सिंह का व्याख्यान क्रमशः इतिहास में साक्ष्य एवं साक्ष्यों की व्याख्या तथा अयोध्या के परिप्रेक्ष्य में जैन धर्म नामक शीर्षकों पर व्याख्यान आयेजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रो0 किरण कुमार थपलियाल, प्रो0 अमर सिंह एवं इतिहास, संस्कृति एंव पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 अजय प्रताप सिंह द्वारा मॉ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन किया गया। तत्पश्चात् विभागाध्यक्ष प्रो0 अजय प्रताप सिंह द्वारा आये हुए मुख्य अतिथियों का माल्यार्पण कर एवं पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया। अपने सम्बोधन में प्रो0 सिंह ने सबसे पहले विश्व प्रसिद्व ख्यातिलब्ध इतिहासकार प्रो0 किरण कुमार थपलियाल जी को विभाग में पधारने पर कोटिशः आभार ज्ञापित करते हुए बताया कि 82 वर्ष के उम्र में भी प्रो0 थपलियाल जी की छात्रों के प्रति रूचि हमेशा ही दिखाई पडती है। क्योंकि शोध छात्रों को शोध के विषय एवं साक्ष्यों के प्रयोग के बारे में बताने के लिए जब उन्हें आमंत्रित किया गया तो सहर्ष ही स्वीकृति प्रदान कर दी। प्रो0 सिंह ने सभी को बताया कि ऐसे ही महान विभूतियों को विभाग में समय–समय आमंत्रित किया जायेगा, जिससे शोध एवं समस्त छात्र लाभवन्वित होंगे।

अपने सम्बोधन में प्रो0 किरण कुमार थपलियाल ने बताया कि बिना साक्ष्य के हम शोध के अंतगर्त कोई भी वक्तव्य नही दे सकते हैं, जब साक्ष्य सबल होते हैं, तो हमारे निष्कर्ष निश्चित होते हैं और जब साक्ष्य निर्बल होते हैं तो निष्कर्ष भी अनिश्चित होते हैं। उन्होने बताया कि प्राचीन भारतीय इतिहास में तिथिक्रम का नितान्त अभाव है, सबसे पहले अशोक के अभिलेखों से हमें तिथिक्रम की जानकारी मिलती है। अपने उदाहरणों द्वारा उन्होनें मौर्य काल, गुप्तकाल, हूण, कुषाण, पल्लव, चालुक्य वंश के तमाम राजाओं के तिथिक्रम से सम्बन्धित विवाद है, उसका निष्कर्ष कैसे निकाला जाए उसके बारे में समस्त छात्र–छात्राओं को विस्तार पूर्वक समझाया। ज्ञातव्य है कि प्रो0 थपलियाल ने ही अशोक के 18वें लधु शिलालेख की खोज की थी। उन्हानें अपने तमाम अनुभवों को छात्रों के बीच साझा करते हुए कहा कि जैसे– जैसे साक्ष्य मिलते जाते हैं, वैसे इतिहास की रचना होती जाती है। शोध करते समय इस बात का विषेष घ्यान रखना चाहिए कि उस विषय पर कोई नए साक्ष्य प्रकाश में आयें हों तो उसका अवलोकन अवश्य करना वाहिए। उन्होनें यह भी बताया कि लिपि के आधार पर भी तिथिक्रम निश्चित किया जा सकता है लेकिन इसमें छात्रों को काफी सावधानी बरतना चाहिए, जब तक उपलब्ध साक्ष्यों की पुष्टि किसी दूसरे साक्ष्यों से नही हो जाती है, तब तक आप किसी सही निष्कर्ष पर नही पहुॅच सकते।

अपने सम्बोधन में अयोध्या के परिप्रेक्ष्य में जैन धर्म पर बोलते हुए प्रो0 अमर सिंह ने कहा कि अयोध्या एवं साकेत अलग–अलग नही बल्कि एक ही थे। जैन धर्म के पॉच तीर्थकर क्रमषः ऋषभदेव, अजीत नाथ, अनन्त नाथ, अभिनन्दन नाथ तथा सुमतिनाथ अयोध्या में ही पैदा हुए। इन तीर्थकरों के अनेकों मंदिर एवं टोंक आज भी अयोध्या में देखे जा सकते हैं, जो उनकी प्रमाणिकता को प्रबल करता है। जैन धर्म के सिद्वान्तों पर परिचर्चा करते हुए प्रो0 अमर सिंह ने तीर्थकर ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य एवं शिल्प तथा महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित सत्य, अंहिसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रहमचर्य आदि सिद्वान्तों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने शोध छात्रों को बताया कि अयोध्या में पैदा हुए

तीर्थकरों पर बहुत ही शोध की आवश्यकता है, जिसे अवध विष्वविद्यालय के छात्रों को ऋषभदेव जैन शोध पीठ के माध्यम से करना वाहिए।

कार्यक्रम का संचालन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के शिक्षक प्रो0 राजेश कुमार सिंह ने किया।

अन्त में धन्यवाद ज्ञापन ऋषभदेव जैन शोध पीठ के सहायक आचार्य डॉ0 देव नारायण वर्मा ने किया, धन्यवाद ज्ञापन में उन्होने प्रो0 थपलियाल, प्रो0 अमर सिंह का सादर आभार प्रकट किया, साथ ही प्रो0 अजय प्रताप सिंह को आभार प्रकट करते हुए कहा कि उनकी ही प्रेणना से ही यह सब कार्यक्रम होते रहते हैं।

इस कार्यक्रम में डॉ0 संजय चौधरी, डॉ0 दिवाकर त्रिपाठी, डॉ0 आलोक कुमार मिश्रा, डॉ0 महेन्द्र पाल सिंह, डॉ0 मृदुला पाण्डेय, कैलाष पाण्डेय, हरीराम तथा विभागीय छात्र अभिषेक पाण्डेय, मार्या मौर्या, एकता, पारूल, अनुराधा, ज्योति तिवारी आदि मौजूद थे।